

पुरुषार्थ चतुष्टय : भारतीय जीवन-दर्शन का आधार

नीलम शर्मा

शोध छात्रा अनुसंधान केन्द्र

ज.रा.रा.सं.वि. जयपुर

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं में से एक है। इस संस्कृति की विशेषता यह है कि उसने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष का गहन विश्लेषण करते हुए उसके लिए आदर्श जीवन-पद्धति का निर्धारण किया है। भारतीय दर्शन में मानव जीवन को केवल जैविक अस्तित्व न मानकर एक साधना के रूप में देखा गया है। इस साधना की सफलता हेतु ऋषियों ने पुरुषार्थ-चतुष्टय का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

‘पुरुषार्थ’ शब्द दो पदों—‘पुरुष’ और ‘अर्थ’—से मिलकर बना है। ‘पुरुष’ का अर्थ यहाँ मानव मात्र से है तथा ‘अर्थ’ का अभिप्राय अभिलषित लक्ष्य अथवा प्राप्तव्य वस्तु से है। इस प्रकार मानव द्वारा प्राप्त किए जाने योग्य जिन उद्देश्यों को जीवन का लक्ष्य माना गया है, वे पुरुषार्थ कहलाते हैं। भारतीय शास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को चार प्रमुख पुरुषार्थों के रूप में स्वीकार किया गया है।

महर्षि व्यास ने कहा है—

धर्मार्थकाममोक्षाणां पुरुषार्थाः प्रकीर्तिताः।

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही मनुष्य जीवन के चार प्रमुख पुरुषार्थ हैं।

पुरुषार्थ की अवधारणा

संस्कृत व्युत्पत्ति के अनुसार—

“पुरुषैरर्थ्यते इति पुरुषार्थः”

अर्थात् जिसे मनुष्य प्राप्त करना चाहता है, वही पुरुषार्थ कहलाता है।

मनुष्य जीवन अनेक इच्छाओं, आकांक्षाओं तथा प्रयत्नों का समुच्चय है। वह सुख, समृद्धि, प्रतिष्ठा, प्रेम तथा अन्ततः शाश्वत आनन्द की खोज करता है। भारतीय चिंतकों ने इन सभी आकांक्षाओं को चार मूल श्रेणियों में विभाजित किया है—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। यही पुरुषार्थ-चतुष्टय है।

पुरुषार्थ सिद्धान्त की विशेषता यह है कि यह जीवन के लौकिक और पारलौकिक दोनों पक्षों का समन्वय करता है। यह न तो केवल भोग का समर्थन करता है और न ही केवल त्याग का, बल्कि जीवन में संतुलन स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

1. धर्म : जीवन का आधार

पुरुषार्थों में धर्म को प्रथम स्थान प्रदान किया गया है। 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है—धारण करना। जो समाज, व्यक्ति और विश्व-व्यवस्था को धारण करता है, वही धर्म है।

महाभारत में कहा गया है—

धारणाद्धर्ममित्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः।

अर्थात् जो प्रजा को धारण करे, वही धर्म है।

धर्म केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, अपितु सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, संयम, परोपकार तथा कर्तव्यपालन जैसे नैतिक मूल्यों का समुच्चय है। धर्म मनुष्य के जीवन को मर्यादित एवं अनुशासित बनाता है।

मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

धर्म के अभाव में अर्थ और काम अनियंत्रित होकर समाज में अराजकता उत्पन्न कर सकते हैं। अतः धर्म को अन्य पुरुषार्थों का नियामक माना गया है।

2. अर्थ : जीवनोपयोगी साधनों की प्राप्ति

अर्थ पुरुषार्थ का दूसरा आयाम है। सामान्यतः अर्थ का तात्पर्य धन-संपत्ति से लिया जाता है, किन्तु भारतीय दृष्टि में अर्थ का क्षेत्र अधिक व्यापक है। जीवन-निर्वाह, सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन तथा लोककल्याण हेतु जिन साधनों की आवश्यकता होती है, वे सभी अर्थ के अन्तर्गत आते हैं।

कौटिल्य ने अर्थ को राज्य और समाज की स्थिरता का मूलाधार माना है। अर्थ के बिना न तो धर्म का पालन सम्भव है और न ही काम की पूर्ति।

किन्तु भारतीय संस्कृति ने अर्थोपार्जन के लिए नैतिक मर्यादाओं का भी निर्धारण किया है। धर्मसम्मत उपायों से अर्जित धन ही प्रशंसनीय माना गया है। अन्यथा वह व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए हानिकारक सिद्ध होता है।

इस प्रकार अर्थ मानव जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है, न कि स्वयं जीवन का अंतिम लक्ष्य।

3. काम : मानवीय इच्छाओं की संतुलित पूर्ति

'काम' का सामान्य अर्थ इच्छा, आकांक्षा अथवा प्रेम है। भारतीय दर्शन में काम को केवल इन्द्रिय-सुख तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि सौन्दर्यबोध, प्रेम, कला, साहित्य, संगीत तथा जीवन के सौम्य आनन्दों को भी इसके अन्तर्गत स्वीकार किया गया है।

काम मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। यदि इच्छाओं का दमन किया जाए तो व्यक्तित्व में विकृतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं, किन्तु यदि उन्हें अनियंत्रित छोड़ दिया जाए तो पतन की सम्भावना रहती है। इसलिए धर्म के निर्देशन में काम की पूर्ति का विधान किया गया है।

भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।

(गीता 7/11)

अर्थात् धर्म के विरुद्ध न होने वाला काम मेरा ही स्वरूप है।

अतः काम का उद्देश्य जीवन में आनन्द और संतोष की प्राप्ति है, किन्तु यह धर्म की मर्यादाओं से आवद्ध होना चाहिए।

4. मोक्ष : मानव जीवन का परम पुरुषार्थ

मोक्ष को पुरुषार्थ-चतुष्टय का चरम एवं सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है। 'मोक्ष' का अर्थ है—संसार के बन्धनों से मुक्ति तथा आत्मा के वास्तविक स्वरूप की प्राप्ति।

उपनिषदों में मानव जीवन का परम प्रयोजन आत्मज्ञान को बताया गया है। अज्ञान के कारण जीव जन्म-मरण के चक्र में बँधा रहता है। जब ज्ञान के द्वारा यह अज्ञान दूर हो जाता है, तब मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कठोपनिषद् में कहा गया है—

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।

मोक्ष केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं, बल्कि आत्मानुभूति की अवस्था है। यह परम शान्ति, आनन्द और स्वतंत्रता का अनुभव कराता है।

भारतीय दर्शन की विभिन्न परम्पराओं—वेदान्त, सांख्य, योग, न्याय आदि—ने मोक्ष के स्वरूप की भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ की हैं, किन्तु सभी ने इसे जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य स्वीकार किया है।

पुरुषार्थों का पारस्परिक सम्बन्ध

पुरुषार्थ-चतुष्टय परस्पर विरोधी न होकर पूरक हैं। धर्म, अर्थ और काम को 'त्रिवर्ग' कहा गया है तथा मोक्ष को उनका परम परिपाक माना गया है।

धर्म के निर्देशन में अर्थ का अर्जन और काम की पूर्ति करने वाला व्यक्ति क्रमशः आन्तरिक शुद्धि प्राप्त करता हुआ मोक्ष की ओर अग्रसर होता है। यदि धर्म का अभाव हो तो अर्थ और काम विनाशकारी बन जाते हैं। इसी प्रकार अर्थ के बिना धर्म एवं काम का समुचित पालन कठिन हो जाता है।

अतः भारतीय जीवन-दृष्टि संतुलन और समन्वय पर आधारित है, जहाँ चारों पुरुषार्थ मानव व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को विकसित करते हैं।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुरुषार्थ-चतुष्टय की प्रासंगिकता

वर्तमान युग भौतिक उन्नति, उपभोक्तावाद तथा तीव्र प्रतिस्पर्धा का युग है। ऐसे समय में पुरुषार्थ-चतुष्टय की अवधारणा अत्यन्त प्रासंगिक प्रतीत होती है।

धर्म व्यक्ति को नैतिकता प्रदान करता है, अर्थ आर्थिक स्थिरता देता है, काम जीवन में आनन्द का संचार करता है तथा मोक्ष आध्यात्मिक संतुलन स्थापित करता है। यदि आधुनिक मानव इन चारों पुरुषार्थों के समन्वित स्वरूप को समझे तो व्यक्तिगत, सामाजिक तथा वैश्विक स्तर पर अनेक समस्याओं का समाधान सम्भव हो सकता है।

इस दृष्टि से पुरुषार्थ-चतुष्टय केवल प्राचीन दार्शनिक सिद्धान्त नहीं, बल्कि आज भी मानव जीवन के लिए एक व्यवहारिक मार्गदर्शक है।

उपसंहार

भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ-चतुष्टय मानव जीवन के समग्र विकास का आधारभूत सिद्धान्त है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के चार ऐसे आयाम हैं जो व्यक्ति को नैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से परिपूर्ण बनाते हैं। धर्म जीवन को दिशा देता है, अर्थ उसे आधार प्रदान करता है, काम उसे सौन्दर्य एवं आनन्द से सम्पन्न बनाता है तथा मोक्ष उसे परम लक्ष्य तक पहुँचाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि पुरुषार्थ-चतुष्टय भारतीय जीवन-दर्शन की अमूल्य देन है, जो आज भी मानवता को संतुलित, मर्यादित एवं कल्याणकारी जीवन का संदेश प्रदान करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

श्रीमद्भगवत महापुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर।

भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर।

मनुस्मृति, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

महाभारत, गीता प्रेस, गोरखपुर।

कठोपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर।

अर्थशास्त्र, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, राजपाल एण्ड सन्स।

बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

वाचस्पति गैरोला, भारतीय दर्शन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान।

हिरेन्द्रनाथ दत्त, भारतीय संस्कृति का विकास, हिन्दी समिति प्रकाशन।